पवित्र क़ुरआन में यीशु और मरियम की कहानी (3 का भाग 3): यीशु II

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: [लेख](#) [तुलनात्मक धर्म](#) [मरयम](#)

श्रेणी: [लेख](#) [तुलनात्मक धर्म](#) [यीशु](#)

श्रेणी: [लेख](#) [इस्लाम की मान्यताएं](#) [पैगंबरों की कहानियां](#)

द्वारा: IslamReligion.com

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

यीशु का जुनून

"तथा जब यीशु ने उनसे अविश्वास का संवेदन किया, तो कहाः ईश्वर के धर्म की सहायता में कौन मेरा साथ देगा? तो शिष्यों ने कहाः हम ईश्वर के सहायक हैं। हमने ईश्वर पर विश्वास किया, तुम इसके साक्षी रहो कि हम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।[1] हे हमारे पालनहार! जो कुछ तूने उतारा है, हम उसपर विश्वास करते हैं तथा तेरे दूत का अनुसरण करते हैं, अतः हमें भी साक्षियों में अंकित कर ले। तथा उन्होंने षड्यंत्र रचा और हमने भी योजना रची तथा ईश्वर योजना रचने वालों में सबसे अच्छा है। जब ईश्वर ने कहाः हे यीशु! मैं तुझे पूर्णतः लेने वाला [2] तथा अपनी ओर उठाने वाला हूं तथा तुझे अविश्वासियों से पवित्र (मुक्त) करने वाला हूं तथा तेरे अनुयायियों को प्रलय के दिन तक काफ़िरों के ऊपर करने वाला हूं। फिर तुम्हारा लौटना मेरी ही ओर है। तो मैं तुम्हारे बीच उस विषय में निर्णय कर दूंगा, जिसमें तुम विभेद कर रहे हो।" (क़ुरआन 3:52-55)

"तथा उनके कहने के कारण कि हमने ईश्वर के दूत, मरयम के पुत्र, ईसा मसीह को वध कर दिया, जबकि (वास्तव में) उसे वध नहीं किया और न सलीब (फाँसी) दी, परन्तु उनके लिए (इसे) संदिग्ध कर दिया गया। [3] निःसंदेह, जिन लोगों ने इसमें विभेद किया, वे भी शंका में पड़े हुए हैं और उन्हें इसका कोई ज्ञान नहीं, केवल अनुमान के पीछे पड़े हुए हैं और निश्चय उसे उन्होंने वध नहीं किया है। बल्कि ईश्वर ने उसे अपनी ओर आकाश में उठा लिया [4] है तथा ईश्वर प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।"

(क़ुरआन 4:157-158)

यीशु के अनुयायी

"फिर आपके पास ज्ञान आ जाने के पश्चात् कोई आपसे यीशु के विषय में विवाद करे, तो कहो कि आओ, हम अपने पुत्रों तथा तुम्हारे पुत्रों और अपनी स्त्रियों तथा तुम्हारी स्त्रियों को बुलाते हैं और स्वयं को भी, फिर ईश्वर से सविनय प्रार्थना करें कि ईश्वर की धिक्कार मिथ्यावादियों पर हो। वास्तव में, यही सत्य वर्णन है तथा ईश्वर के सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय ईश्वर ही प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है। फिर भी यदि वे मुँह फेरें, तो निःसंदेह ईश्वर उपद्रवियों को भली-भाँति जानता है। (हे पैगंबर!) कहो कि हे ईसाइयों! एक ऐसी बात की ओर आ जाओ [5] जो हमारे तथा तुम्हारे बीच समान रूप से मान्य है कि ईश्वर के सिवा किसी की वंदना न करें और किसी को उसका साझी न बनायें तथा हममें से कोई एक-दूसरे को ईश्वर के सिवा पालनहार न बनाये [6]।' फिर यदि वे विमुख हों, तो आप कह दें कि तुम साक्षी रहो कि हम (ईश्वर के) आज्ञाकारी हैं" (क़ुरआन 3:61-64)

"निश्चय वे अविश्वासी हो गये, जिन्होंने कहा कि मरयम का पुत्र मसीह़ ही ईश्वर है। (हे पैगंबर!) उनसे कह दो कि यदि ईश्वर मरयम के पुत्र और उसकी माता तथा जो भी धरती में है, सबका विनाश कर देना चाहे, तो किसमें शक्ति है कि वह उसे रोक दे? तथा आकाश और धरती और जो भी इनके बीच है, सब ईश्वर ही का राज्य है, वह जो चाहे, उतपन्न करता है तथा वह जो चाहे, कर सकता है। तथा यहूदी और ईसाईयों ने कहा कि हम ईश्वर के पुत्र तथा प्रियवर हैं। आप पूछें कि फिर वह तुम्हें तुम्हारे पापों का दण्ड क्यों देता है? बल्कि तुमभी वैसे ही मानव पूरुष हो, जैसे दूसरे हैं, जिनकी उत्पत्ति उसने की है। वह जिसे चाहे, क्षमा कर दे और जिसे चाहे, दण्ड दे तथा आकाश और धरती तथा जो उन दोनों के बीच है, ईश्वर ही का राज्य है और उसी की ओर सबको जाना है। (क़ुरआन 5:17-18)

"निश्चय वे अविश्वासी हो गये, जिन्होंने कहा कि ईश्वर मरयम का पुत्र मसीह़ ही है। जबकि मसीह़ ने कहा थाः हे बनी इस्राईल! उस ईश्वर की वंदना करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम्हारा पालनहार है, वास्तव में, जिसने ईश्वर का साझी बना लिया, उसपर ईश्वर ने स्वर्ग को ह़राम (वर्जित) कर दिया और उसका निवास स्थान नर्क है तथा अत्याचारों का कोई सहायक न होगा। निश्चय वे अविश्वासी हो गये, जिन्होंने कहा कि ईश्वर तीन का तीसरा है!'[7] जबकि कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही अकेला पूज्य है और यदि वे जो कुछ कहते हैं, उससे नहीं रुके, तो उनमें से अविश्वासियों को दुखदायी यातना होगी। वे ईश्वर से माफ़ी तथा क्षमा याचना क्यों नहीं करते, जबकि ईश्वर अति क्षमाशील दयावान् है।” (क़ुरआन 5:72-74)

"तथा यहूदी कहते हैं कि उज़ैर ईश्वर का पुत्र है,'[8] और (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह ईश्वर का पुत्र है। ये उनके अपने मुँह की बातें हैं। वे उनके जैसी बातें कर रहे हैं, जो इनसे पहले अविश्वासी थे। उनपर ईश्वर की मार! वे कहाँ बहके जा रहे हैं? उन्होंने अपने विद्वानों और धर्माचारियों (संतों) को ईश्वर के सिवा पूज्य बना लिया तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जबकि उन्हें जो आदेश दिया गया था, वो इसके सिवा कुछ न था कि एक ईश्वर की वंदना करें। कोई पूज्य नहीं है, परन्तु वही। वह उससे पवित्र है, जिसे उसका साझी बना रहे हैं।"[9] (क़ुरआन 9:30-31)

"ऐ विश्वास करने वालो! बहुत-से विद्वान तथा धर्माचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं और (उन्हें) ईश्वर की राह से रोकते हैं तथा जो सोना-चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उसे ईश्वर की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभ सूचना सुना दें।" (क़ुरआन 9:34)

दूसरी बार आना

"और सभी ईसाई उस (ईसा) के मरने से पहले उसपर अवश्य विश्वास करेंगे।[10] और प्रलय के दिन वह उनके विरुध्द साक्षी होगा।"[11] (क़ुरआन 4:159)

"तथा वास्तव में, वह (ईसा) एक बड़ा लक्षण है प्रलय का। अतः, कदापि संदेह न करो[12] प्रलय के विषय में और मेरी ही बात मानो। यही सीधी राह है। (क़ुरआन 43:61)

जिन्दा उठने के दिन यीशु

"जब ईश्वर ने कहाः हे मरयम के पुत्र यीशु! अपने ऊपर तथा अपनी माता के ऊपर मेरा पुरस्कार याद कर, जब मैंने पवित्रात्मा (जिब्रील) द्वारा तुझे समर्थन दिया, तू गोद में तथा बड़ी आयु में लोगों से बातें कर रहा था तथा तुझे पुस्तक, प्रबोध, तौरात और इंजील की शिक्षा दी, जब तू मेरी अनुमति से मिट्टी से पक्षी का रूप बनाता और उसमें फूँकता, तो वह मेरी अनुमति से वास्तव में पक्षी बन जाता था और तू जन्म से अंधे तथा कोढ़ी को मेरी अनुमति से स्वस्थ कर देता था और जब तू मुर्दों को मेरी अनुमति से जीवित कर देता था और मैंने बनी इस्राईल से तुझे बचाया था, जब तू उनके पास खुली निशानियाँ लाया, तो उनमें से अविश्वासियों ने कहा कि ये तो खुले जादू के सिवा कुछ नहीं है।।" (कुरआन 5:110)

"तथा जब ईश्वर (प्रलय के दिन) कहेगाः हे मरयम के पुत्र यीशु! क्या तुमने लोगों से कहा था कि ईश्वर को छोड़कर मुझे तथा मेरी माता की पूजा करो?'[13]' वह कहेगाः तू पवित्र है, मुझसे ये कैसे हो

सकता है कि ऐसी बात कहूँ, जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं? यदि मैंने कहा होगा, तो तुझे अवश्य उसका ज्ञान हुआ होगा। तू मेरे मन की बात जानता है और मैं तेरे मन की बात नहीं जानता। वास्तव में, तू ही परोक्ष (ग़ैब) का अति ज्ञानी है।'[14] मैंने केवल उनसे वही कहा था, जिसका तूने आदेश दिया था कि ईश्वर की इबादत करो, जो मेरा पालनहार तथा तुम सभी का पालनहार है। मैं उनकी दशा जानता था, जब तक उनमें था और जब तूने मेरा समय पूरा कर दिया, तो तू ही उन्हें जानता था और तू प्रत्येक वस्तु से सूचित है। यदि तू उन्हें दण्ड दे, तो वे तेरे दास (बन्दे) हैं और यदि तू उन्हें क्षमा कर दे, तो वास्तव में तू ही प्रभावशाली गुणी है।"[15] ईश्वर कहेगाः ये वो दिन है, जिसमें सचों को उनका सच ही लाभ देगा। उन्हीं के लिए ऐसे स्वर्ग हैं, जिनमें नहरें प्रवाहित हैं। वे उनमें नित्य सदावासी होंगे, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो गया तथा वे ईश्वर से प्रसन्न हो गये और यही सबसे बड़ी सफलता है। आकाशों तथा धरती और उनमें जो कुछ है, सबका राज्य ईश्वर ही का है तथा वह जो चाहे, कर सकता है।" (क़ुरआन 5:116-120)

फुटनोट:

[1] क़ुरआन में शिष्यों के लिए दिया गया नाम अल-हवारियुन है, जिसका अर्थ है शुद्ध, जैसे सफेद रंग। यह भी बताया जाता है कि वे सफेद रंग के कपड़े पहनते थे।

[2] यीशु को नींद की अवस्था में उठाया गया था। यहाँ जिस शब्द का प्रयोग हुआ है वह वफ़ा है, जिसका अर्थ नींद या मृत्यु हो सकता है। अरबी नींद को माइनर डेथ कहा जाता है। छंद 6:60 और 39:42 में भी देखें, जहाँ वफ़ा शब्द का अर्थ नींद है न कि मृत्यु। चूंकि पद 4:157 यीशु की हत्या और सूली पर चढ़ाए जाने से इनकार करता है, और चूंकि प्रत्येक मनुष्य एक बार मरता है, लेकिन यीशु को पृथ्वी पर वापस आना चाहिए छंद की एकमात्र शेष व्याख्या नींद है।

[3] यीशु की समानता दूसरे पर डाली गई थी, और यह वह है, यीशु नहीं, जिसे सूली पर चढ़ाया गया था। क़ुरआन पर कई टिप्पणियों के अनुसार, जो सूली पर चढ़ाया गया था, वह शिष्यों में से एक था, जो यीशु की समानता को स्वीकार कर रहा था, और स्वर्ग के बदले में यीशु को बचाने के लि खुद को शहीद कर दिया।

[4] यीशु शरीर और आत्मा में जी उठा, और मरा नहीं। वह अभी भी वहीं रहता है, और समय के अंत में पृथ्वी पर लौटेगा। पृथ्वी पर अपनी नियत भूमिका को पूरा करने के बाद, वह अंततः मर जाएंगे।

[5] यही वह है जिसे ईश्वर के सभी पैगंबरों ने बुलाया है और उस पर सहमति व्यक्त की है। और इसलिए यह कथन केवल एक समूह के लिए नहीं है, बल्कि उन लोगों के लिए सामान्य आधार है जो ईश्वर की आराधना करना चाहते हैं।

[6] जब कोई ईश्वर की अवज्ञा करके दूसरे मनुष्य की आज्ञा मानता है, तो उसने उसे ईश्वर के बजाय स्वामी के रूप में माना जाता है।

[7] ट्रिनिटी के संदर्भ में।

[8] यद्यपि सभी यहूदियों ने इस पर विश्वास नहीं किया, वे इसकी निंदा करने में असफल रहे (देखें पद 5:78-79)। जब एक पाप को बने रहने और निर्विरोध फैलने दिया जाता है, तो पूरा समुदाय उत्तरदायी हो जाता है।

[9] धार्मिक विद्वान वे हैं जिनके पास ज्ञान है, और भिक्षु वे हैं जो अनुष्ठान और पूजा में डूबे हुए हैं। दोनों को धार्मिक नेता और उदाहरण माना जाता है, और वे अपने प्रभाव से लोगों को गुमराह कर सकते हैं।

[10] "उसकी मृत्यु" में सर्वनाम पवित्रशास्त्र के लोगों में से यीशु या व्यक्ति को संदर्भित कर सकता है। यदि यह यीशु को संदर्भित करता है, तो इसका अर्थ है कि पवित्रशास्त्र के सभी लोग यीशु के पृथ्वी पर दूसरी बार लौटने पर और उसकी मृत्यु से पहले उस पर विश्वास करने लगेंगे। यीशु तब इस बात की पुष्टि करेगा कि वह ईश्वर की ओर से एक पैगंबर है, न ही ईश्वर और न ही ईश्वर का पुत्र, और सभी लोगों से केवल ईश्वर की पूजा करने और इस्लाम में उसे प्रस्तुत करने के लिए कहेगा। यदि सर्वनाम पवित्रशास्त्र के लोगों में से व्यक्ति को संदर्भित करता है, तो पद का अर्थ है कि उनमें से प्रत्येक अपनी मृत्यु से ठीक पहले देखेगा कि उसे क्या विश्वास दिलाएगा कि यीशु ईश्वर का सच्चा पैगंबर था, न कि ईश्वर। लेकिन उस समय उस विश्वास से उसे कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि यह स्वतंत्र पसंद से नहीं आता है, बल्कि जब वह सजा के स्वर्गदूतों को देखता है।

[11] श्लोक 5:116-118 देखें.

[12] यीशु का दूसरा आगमन इस बात का चिन्ह होगा कि न्याय का दिन निकट है।

[13] ईश्वर के साथ दूसरों की पूजा करना ईश्वर के बजाय उनकी पूजा करने के समान है। दोनों का मतलब है कि पूजा ईश्वर के अलावा किसी और के लिए है, फिर भी केवल ईश्वर ही हैं, जिनकी पूजा करनी चाहिए।

[14] ईश्वर, जैसा कि यीशु ने कहा, जानता है कि यीशु ने अपनी या अपनी माता की आराधना के लिए नहीं बोला। प्रश्न का उद्देश्य उन लोगों की ओर संकेत करना है जो यीशु या मरियम की पूजा करते हैं कि यदि वे यीशु के सच्चे अनुयायी होते, तो वे उस प्रथा को बंद कर देते, क्योंकि यीशु ने इसे कभी नहीं बताया। लेकिन अगर वे बने रहें, तो उन्हें बताएं कि यीशु उन्हें अंतिम दिन मना कर देंगे, और यह कि वे उसका अनुसरण नहीं कर रहे हैं, लेकिन केवल अपनी व्यक्तिगत पसंद का पालन कर रहे हैं।

[15] दूसरे शब्दों में, आप जानते हैं कि कौन दंड के योग्य है, इसलिए आप उसे दंड देंगे। और आप जानते हो कि क्षमा के योग्य कौन है, इसलिए आप उसे क्षमा करोगे। क्योंकि वास्तव में, आप शक्तिशाली हैं जिनके पास दंड देने की शक्ति है, और आप सभी मामलों को निपटाने में बुद्धिमान हैं, इसलिए आप उन्हें क्षमा करते हैं जो क्षमा के पात्र हैं।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/623

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2024 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।